शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -2
December
2024

जनसंचार माध्यम एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के बीच अंतः संबंधों का विश्लेषात्मक अध्ययन

अमित जैन
शोधार्थी
डॉ. मनीष कांत जैन
शोध पर्यवेक्षक
एलएनसीटी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

शोध सारांश

परिवर्तन एक शाश्वत् सत्य है। वर्तमान दौर में पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया ने सम्पूर्ण विश्व को एक वैश्विक गांव के रूप में रूपान्तरित कर दिया है। रूपान्तरण की इस प्रक्रिया में मीडिया की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है। आज सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक वर्चस्व का ये मूलाधार है। मीडिया सिंफ संचार नहीं वह सर्जक भी है यह उपकरण या माध्यम ही नहीं बल्कि परिवर्तन का अस्त्र भी है। यदि किसी विचार, व्यक्ति, राजनीतिक, संस्कृति, मूल्यों या संस्कारों को बदलना है तो मीडिया के बिना यह कार्य संभव नहीं है। इसके बिना कोई भी विमर्श, अनुष्ठान, संदेश कार्यक्रम अंतः विरोध फीका लगता है। यह अस्व समाज की सामाजिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रस्तुत लेख में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन में मीडिया किस प्रकार अपनी भूमिका निभा रहा है का विश्लेषण है।

कुंजीभूत शब्द

परिवर्तन, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, मीडिया, संचार, संस्कृति, सामाजिक मूल्य संस्कार।

प्रस्तावना

जनसंचार के कारण 21वीं शताब्दी सूचना क्राति का युग है। भूमंडलीकरण का सबसे बड़ा प्रभाव यह पड़ा कि सारा विश्व एक समूह में बंध गया जिसे हम सूचना समाज कह सकते हैं।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -2
December
2024

21वीं शताब्दी में पूँजीवाद एवं समाजवाद दो संस्थाएँ एवं विचारधारा थी। 20वी शताब्दी में औद्योगिक क्रांति तो हुई जिसके कारण आर्थिक विकास की गति बढी लेकिन संचार व्यवस्था की क्रांति नहीं हो पायी। वैज्ञानिक अनुसंधान के कारण 21वी शताब्दी में सूचना तकनीकी में इतनी वृद्धि हुई कि टेलीविजन कम्प्यूटर, टेली कम्यूनिकेशन इत्याादि संचार के माध्यमों का विकास हुआ। Ernest Mandal के अनुसार 21वीं शताब्दी को सास्कृतिक पूँजीयाद कहा जा सकता है। इस मत का समर्थन अनेक विद्वानों ने किया है, जैसे- Jameson ने इसे उत्तर आधुनिकता का युग कहा है। सूचना क्रांति के कारण प्रजातांत्रिक मूल्य का विकास हो रहा है, जिसमें व्यक्ति को सूचना का अधिकार है। सूचना क्रांति के कारण सामाजिक मूल्यों तथा विचारों में परिवर्तन हो रहा है। अब 21वीं शताब्दी में Money Power के बदले ज्ञान शक्ति का स्त्रोत बन गया है। सूचना क्रांति के द्वारा सरकार तथा जनता के बीच दूरी कम हो गई है और प्रजातंत्र में नेताओं का जनता के प्रति उत्तरदायित्व ज्यादा बढ़ रहा है। साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि संचार माध्यम जैसे रेडियो, टीवी, सिनेमा इत्यादि का इतना ज्यादा विकास ही रहा है. जिसके कारण भारतीय समाज में गुणात्मक परिवर्तन हुआ है। जनसंचार के द्वारा हम अपनी परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य विचारधारा इत्यादि का प्रसार करते है जिसके कारण एक तरफ आर्थिक प्रजातंत्र मजबूत होता जा रहा है तो दूसरी तरफ सांस्कृतिक प्रजातंत्र और सामाजिक प्रजातंत्र में वृद्धि हुई है। 21वीं शताब्दी के पूँजीबाद को हम अंतर्राष्ट्रीय पूँजीवाद कह सकते हैं, जिसमें सूचना क्रांति के द्वारा हम आर्थिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यह कहना गलत होगा कि जनसंचार के कारण समाज में उपभोक्ता संस्कृति का ही विकास मात्र होगा। वास्तव में यह पाया जाता है कि उपभोक्ता संस्कृति मात्र नवीन मध्यम वर्ग तक ही सीमित है जो पश्चिमी मूल्यों को अपनाते हैं। जनसंचार के कारण प्रजातांत्रिक मूल्य एवं विचारधारा का प्रचार एवं प्रसार हो रहा है। साथ ही साथ हम कह सकते हैं कि नौकरशाहों एवं राज्य पर जनसंचार का नियंत्रण बढ़ता जा रहा है। सूचना क्राति के कारण सबसे बड़ा परिवर्तन यह हुआ है कि व्यक्ति अपने विचार संस्कृति का प्रदर्शन किसी समय तथा किसी समाज में कर सकता है। संचार माध्यम के कारण निम्नलिखित संस्थाओं में परिवर्तन लाया है -

1. सरकार की तानाशाही पर संचार माध्यम का अंकुश लगता है।
2. वस्तुओं का उत्पादन सार्वभौमिक रूप से हो रहा है।
3. हमारी परंपरा तथा विचारधारा में पुनर्जागरण हो रहा है।
4. इलेक्ट्रोनिक मीडिया के कारण परंपरागत पूँजीवाद, उत्तर पूँजीवादी समाज में बदल रहा है।
5. जनसंचार के कारण सामाजिक एकता में वृद्धि हुई है, जिसकी चर्चा प्रो. योगेन्द्र सिंह ने Culture Change on Media Globalization and Identity में किया है।

समाज एवं जनसंचार

जनसंचार एवं समाज के बीच द्वंद्वात्मक संबंध पाया जाता है। जनसंचार के माध्यम से हम समाज में हो रहे प्रत्येक दिन की घटना के बारे में जानकारी प्राप्त करते है। हम समाज तथा प्रकृति के बारे में सार्वभौमिक रूप से सूचना किसी समय प्राप्त कर सकते है। उदाहरण के लिए टीवी के द्वारा हम मौसम, राजनीति, दुर्घटना, लड़ाई, आन्दोलन तथा आर्थिक विकास से संबन्धित रोजगार समाचार तथा सामाजिक चेतना के बारे में जान सकते हैं। प्राकृतिक हादसे के बारे में तथा उससे बचने के उपाय के बारे में हमें दिन-प्रतिदिन सूचना मिलती रहती है जिसके कारण हम प्रकृति पर नियंत्रण कर सकते हैं और दुर्घटनाओं को टाल सकते है। सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ सूचना क्रांति मनोरंजन का एक साधन बन गया है। टी.वी. पर हम सिनेमा, सिरियल इत्यादि देखते हैं जिसके कारण सामाजिक मूल्य में हो रहे अनुकारनशील परिवर्तन के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। अपराध खेल इत्यादि के बारे में भी स्थानीय टीवी के द्वारा हमें ज्ञान प्राप्त होता रहता है। जनसंचार माध्यम समाजीकरण का एक नया साधन बन गया है। परंपरागत समाज में मौखिक वार्तालाप के द्वारा हम अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के बारे में जानते है। परंपरागत समाज में परिवार, नातेदारी, धर्म, परपरा, राज्य इत्यादि सामाजिक नियंत्रण तथा सामाजिकरण के साधन माने जाते थे लेकिन 21वीं शताब्दी में सूचना क्रांति के कारण जनसंचार समाजीकरण का प्रमुख अंग बन गया है. जिसके कारण हम अपनी संस्कृति से लेकर विज्ञान में हो रही प्रगति के बारे में जानते हैं। जनसंचार के द्वारा हम सामाजिक विरोधाभास, सामाजिक बुराइयों तथा सामाजिक अपराध को समाप्त कर

सकते हैं। जनसंचार के कारण हमारे जीवन में आमूल परिवर्तन हुआ है, जिसके कारण हमें नए प्रकार के अनुसंधान करने के लिए प्रेरित किया जाता था। मार्क्सवादियों का यह कथन सही नहीं है कि संचार माध्यम पर नौकरशाही तथा राज्य का नियंत्रण है। 21वीं शताब्दी में जनसंचार के द्वारा हम संचार नौकरशाही पर अंकुश लगाकर नियंत्रण करते हुए जनता को अपने अधिकार एवं कर्तव्य के बारे में जानकारी प्रदान करते है। जनसंचार के द्वारा हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में भी ज्ञान प्राप्त करते हैं। समाज तथा संस्कृति में अंतद्द्वंद्व पाया जाता है और वे एक-दूसरे के पूरक भी है। परंपरागत समाज में हम मात्र स्थानीय संस्कृति के बारे में ज्ञान रखते थे लेकिन जनसंचार के कारण हम दूसरे देशों की संस्कृति, कला, दर्शन इत्यादि के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह कहना गलत होगा कि पूँजीवाद में हमारी सांस्कृतिक धरोहर समाप्त हो जायेगी। हकीकत में यह हो रहा है कि संपूर्ण विश्व एक आर्थिक व्यवस्था का अंग बन गया है जिसे हम अंतर्राष्ट्रीय पूँजीवाई कहते हैं। सपूर्ण विश्व में पूँजीवाद के बावजूद प्रत्येक देश की संस्कृति एवं राजनीति अलग होती है। यहाँ पर हम कह सकते हैं कि आर्थिक व्यवस्था सास्कृतिक व्यवस्था को निर्धारित नहीं करती बल्कि सांस्कृतिक व्यवस्था आर्थिक व्यवस्था को निर्धारित कर रही है। सूचना क्रांति के कुछ नकारात्मक परिणाम भी है, जैसे लोगों में आलसीपन बढ़ना, सामाजिक उत्तरदायित्व से कटना, व्यक्तिगत रूचि का समाप्त होना, महिलाओं द्वारा सास्कृतिक पूँजीवाद का प्रदर्शन करना तथा सूचना क्रांति के कारण व्यक्ति में सृजनात्मक शक्ति का समाप्त होना। इन सारे विरोधाभासों के बावजूद सूचना क्राति हमारे समाज में सांस्कृतिक चेतना तथा राजनीतिक चेतना के द्वारा अनुकूलनशील तथा ऐतिहासिक परिवर्तन लाई है।

जनसंचार एवं भारत (Media and India)

भारत में सूचना क्रांति तीव्र गति से बढ़ रही है. जिसके कारण हम अपनी सास्कृतिक विविधता तथा सभ्यता के बारे में टेलीविजन के द्वारा जानकारी प्राप्त करते हैं। जनसंचार के कारण हमारे शिक्षण सस्थान में परिवर्तन आया है। अब हम शिक्षा कम्प्यूटर के द्वारा भी ले सकते हैं। लेकिन सूचना जाति की सबसे बड़ी खामी यह है कि कम्प्यूटर तथा इंटरनेट ने भारतीय लोगों को ज्यादा प्रभावित करते हुए यांत्रिक बना दिया है, जिसके कारण सामुदायिक

चेतना में कमी आई है। इसका सबसे बड़ा साधन प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, दूरदर्शन तथा Audio Visual Media है, जो हमारी सांस्कृतिक गरिमा को प्रदर्शित करती है, लेकिन दूसरी और माध्यम वर्ग में उपभोक्ता संस्कृति में भौतिकवादी संस्कृति का विकास किया है। लेकिन इन विरोधाभासों के बावजूद संचार व्यवस्था हमारी सांस्कृतिक तारतम्यता तथा परिवर्तन का अंग बन गई है। दूरदर्शन का सबसे बड़ा फायदा यह है कि ग्रामीण अशिक्षित व्यक्ति भी टी. वी के द्वारा मनोरंजन तथा सामाजिक घटनाओं के बारे में जान सकते हैं।टी वी. हमारे ज्ञान को एक पीड़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करता है। ही वी देखने के कारण लोगों में नए-नए तरह के फैशन विचार तथा संस्कृति का विकास हो रहा है। जिसे हम Cultural Revolution कह सकते है।

मीडिया तथा सामाजिक जीवन के बीच गहरा संबन्ध बनता जा रहा है। गिडन्स के अनुसार, आधुनिक समाज में जनसंचार के सामन मूलभूत भूमिका निभाते हैं. समाचार पत्र. पत्रिकाएं, टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, इंटरनेट (सोशल साईट्स) इत्यादि जो गृहद् जन तक पहुंचने में सक्षम है उनका हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पढ़ता है। 12 मीडिया की भूमिका स्वमाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन में कई परिपेक्ष्यों में दृष्टिगत होती जा रही है। आज मीडिया समाजीकरण का मध्यम बनता जा रहा है। इसमें प्रचारित प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों ने व्यक्ति की ना केवल सोच में परिवर्तन किया है बल्कि उसकी जीवनशैली को भी प्रभावित कर रहा है। ये कार्यक्रम एक ओर सामाजिक जागरूकता लाकर शिक्षा, स्वस्थ समाज की अवधारणा समाज में उत्पन्न कर रहे है वहीं पर इन्ही कार्यक्रमों में प्रचारित विवाहेत्तर सम्बन्धी कार्यक्रम षडयन्त्रकारी कार्यक्रम, कानून भजन व हिंसा के कार्यक्रम जो परम्परागत मूल्यों और मान्यताओं को अनैतिकता और अपरिहार्य रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। समाज में मीडिया जां परिवर्तन ला रहा है यह हमारे परिवार, सामाजिक सम्बन्धों और राष्ट्र के प्रति किस प्रकार के सोच का प्रतिनिधित्व करता है इस पर गभीरता से विचार करना होगा। इंटलेट (सोशल साईट्स) व्यक्ति की जीवनशैली और व्यक्तित्य को बदल रहा है। ये एक ऐसे समाज की रचना कर रहा है जहा सब कुछ खुला है बाजार की तरह आप कहीं भी रहे इंटानेट आपके साथ रहेगा। आप जब चाहे अपने दोस्तों सम्बन्धियों और यहाँ तक कि अपने विवाह सम्बन्धी

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -2
December
2024

चर्चा भी कर सकते है। शादियां अब इंटरनेट पर तय होने लगी है। इस तरह मीडिया ने सूचना का व्यावसायीकरण कर दिया है। समाज को अपने मोहक जाल में समा लिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रावत हरिकृष्ण (2006), उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोष रावत पब्लिकेशन्ना जयपुर।
2. चौपड़ा, लब्मेद्वा (2002), जनसंचार का समाजशास्त्र आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रचकूला।
3. दुबे श्यामवरण (1986), सचान और विकास प्रकाशन विभाग भारत सरकार नई दिल्ली।
4. बसु, नरेन्द्र (2007), मास मीडिया और समकालीन सामाजिक विज्ञान: कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, दिल्ली।
5. सिंह जितेंद्र (2008), मीडिया और समाज सुमित एंटरप्राइजेज, नई दिल्ली
6. शर्मा दी राकेश (2000), संचार एवं सामाजिक परिवर्तन आदित्य परिश, बीना
7. मूर, डब्ल्यू.ई., (1965), सामाजिक परिवर्तन: प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
8. दोषी एस. एन. (2010). आधुनिक समाज विचारक रावत
9. शर्मा कुमुद (2003), भूमण्डलीकरण और मीडिया पंथ अकादमी, नई दिल्ली।

SHODH SAHITYA
शोध साहित्य